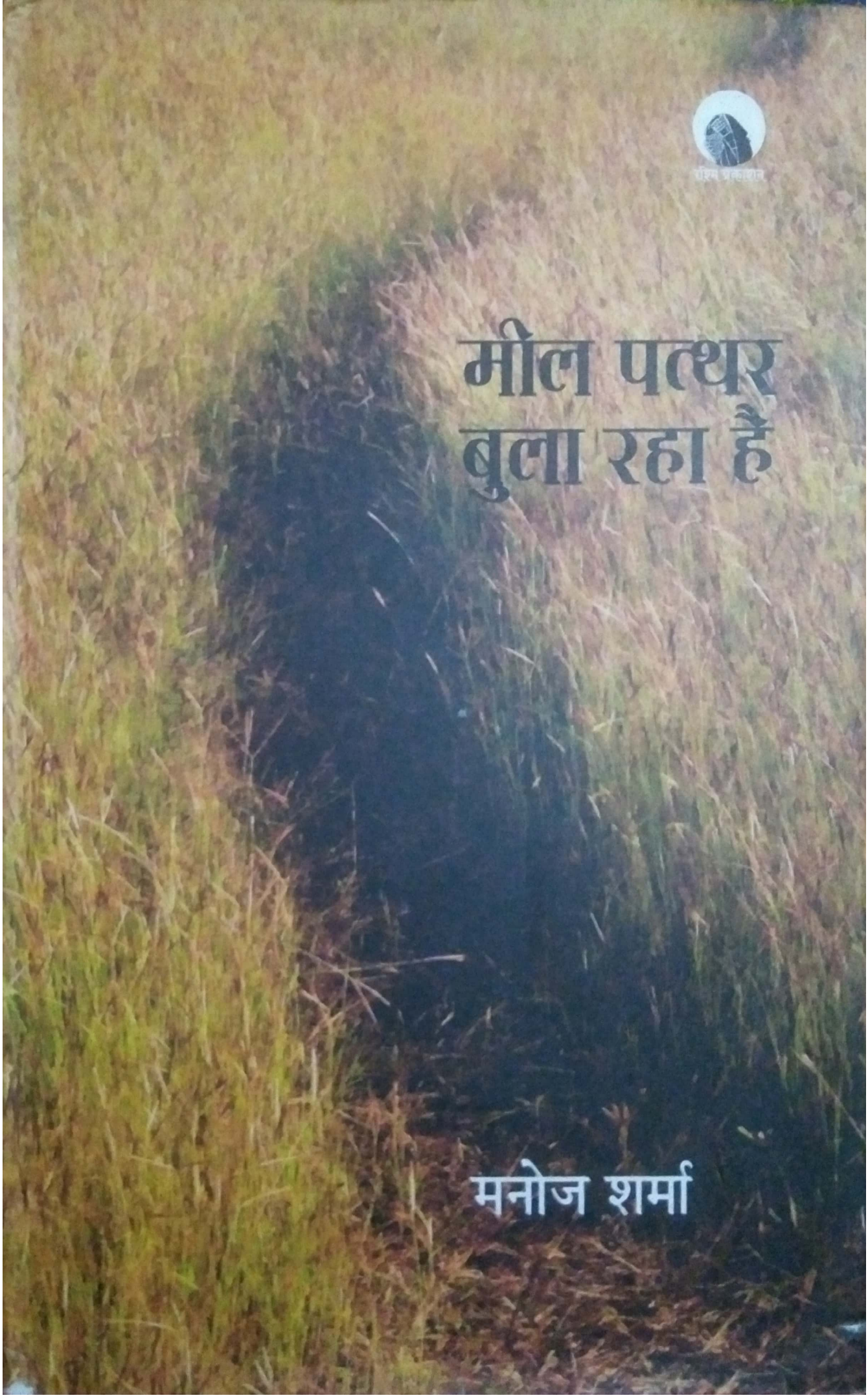

Scanned with OKEN Scanner

मील पत्थर बुला रहा है

मनोज शर्मा

रश्मि प्रकाशन

रश्मि प्रकाशन

महाराजापुरम, केसरी खेड़ा रेलवे क्रॉसिंग के पास

कृष्णा नगर, लखनऊ-226023

मोबाइल : 08756219902, ईमेल : rashmiprakashan2017@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner

मील पत्थर बुला रहा है

© : मनोज शर्मा
पहला संस्करण : 2020

सहयोग राशि : 250 रुपये
ISBN : 978-81-946421-5-2

प्रकाशक
रश्मि प्रकाशन
महाराजापुरम्, केसरीखेड़ा रेलवे क्रॉसिंग के पास
कृष्णा नगर, लखनऊ-226023

आवरण चित्र : किट्टू
मुद्रक
आशी प्रिंटर्स, लखनऊ

Meel Patthar Bula Raha Hai
collection of poems by Manoj Sharma

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक/लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Scanned with OKEN Scanner

तरतीब

आज	13
आभासी संसार	17
जब फूल खिलते हैं ढलान पर	18
दोस्त	21
राजा जी	24
06अगस्त, 2015	25
किट्टू के जन्मदिन पर	27
आओ	30
दृश्य विधान	32
विश्वास	34
पितृ-पक्ष में नानी	37
माँ	39
संगीत	41
समय के पार	43
नव वर्ष में	45
यह रास्ता किधर जाता है	48
जब समय मैला पड़ने लगता है	50
ठंडी रात	52
जादू	55
शांति	58
शुरुआत	60
जोरहाट	62
पाँव	64
फोटोग्राफर	65
चित्रकार	66
ऐसे समय में	67
निरंतर	69
फेसबुक पर कविता	70
रोज़नामचा	72
बोल ही दूँगा	74
कुशल है कोयल	76
तुम मेरी नदी हो	78

Scanned with OKEN Scanner

रूदन 80
तुम हो 82
मृत्युबोध 83
मैं दास नहीं हूँ 86
एक शत्रु समय 88
सफ़र 90
हूँ अभी भी 91
मील पत्थर बुला रहा है 92
दुःख 95
कुछ ऐसे हुआ 97

Scanned with OKEN Scanner

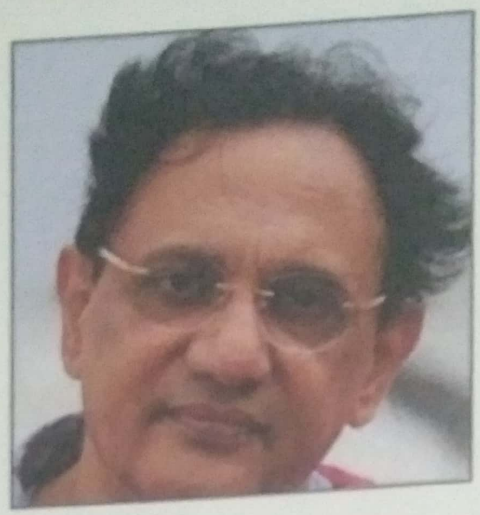

मनोज शर्मा

जन्म व शिक्षा पंजाब में। नौकरी के दौरान जम्मू में 'संस्कृति मंच' की स्थापना। नुक्कड़ नाटकों और पोस्टर कविताओं से युवा-वर्ग को जोड़ा। पंजाबी से हिन्दी व हिन्दी से पंजाबी में शीर्ष लेखकों की रचनाओं का अनुवाद, जिनमें 'भगत सिंह' पर लिखी पंजाबी कविताओं का अनुवाद (हवा में रहेगी मेरे ख्याल की बिजली/उद्भावना)चर्चित रहा। 'पल-प्रतिपल' के भीष्म साहनी, गुरदयाल सिंह व भगत सिंह एवं पाश पर एकाग्र विशेषांकों में सक्रिय सहयोग। 'उद्भावना' के कश्मीर अंक व महमूद दरवेश पर केन्द्रित विशेषांकों में भी भागीदारी। रंगमंच, रेडियो व दूरदर्शन से भी जुड़ाव रहा है। मुंबई प्रवास के दौरान 'जन संस्कृति मंच' के मुंबई चैप्टर की स्थापना।

कविता-संग्रह : 'यथार्थ के घेरे में', 'यकीन मानो मैं आऊँगा', 'बीट लौटता है' तथा 'ऐसे समय में' प्रकाशित। कविताओं का डोगरी, पंजाबी, उर्दू, मराठी व अंग्रेजी में अनुवाद।

पता : नाबार्ड, नाबार्ड टावर, नजदीक सरस्वती धाम, रेल हेड काम्पलैक्स, रेलवे रोड, जम्मू-180012
मोबाइल : 7889474880

Scanned with OKEN Scanner

मनोज शर्मा कई वर्षों से हिन्दी कविता संसार के सुघड़, सचेत और सजग रहवासी हैं। इन दिनों कथित मुख्यधारा से दूर हिन्दी कविता की जीवन से भरी जो शुभ्र धाराएं हैं, मनोज उनके नुमाइंदे हैं। इन धाराओं में सब कुछ को नष्ट करती बाढ़ नहीं आती, इनका पानी आपके घरों में नहीं घुस जाता, इनसे आपको भय नहीं लगता, बल्कि ये आपको ढाढ़स बँधाती हैं और धरा को ज़रुरत भर सींच जाती हैं। मनुष्य होने का सौन्दर्य बहुधा कविता में रेखांकित किया जाता है, लेकिन इसके लिए किया गया पीड़ा और पराजय से भरा संघर्ष अक्सर अनदेखा छूट जाता है, मनोज शर्मा ठीक उसी संघर्ष के कवि हैं।

जैसा कि हम देख ही रहे हैं, आज के महाकवि बड़ी कहानियों और व्याख्याओं के बीच रहते हैं। वे हिन्दी साहित्य की नगरीय-महानगरीय सत्ताओं का निर्माण करते हैं। इन सत्ताओं को एक विनम्र मानवीय चुनौती हमेशा सीमान्तों से मिलती है। जी हाँ, भाषा और साहित्य के भी सीमान्त किंवा हाशिये होते हैं। यह जानना मुश्किल नहीं है कि कलाओं में सत्ताएं दरअसल दयनीय होती हैं और उनके बनाए हाशिये प्राणवान और गरिमा से भरे।

विचार की दहाड़ भले सत्ताओं के पास हो पर आत्मा उन्हीं सहज जनों के पास रहती है, जो इन सत्ताकेन्द्रों से दूर हैं। वे इनमें शामिल रह सकते हैं, पर दूर हैं। कथित रूप से चर्चित कविगण पॉलेमिक्स के नाम पर निज मुख को भरपूर निर्लज्ज होकर चमका रहे हैं, तब कुछ कवि विचार की गरिमा को जनसाधारण के हारे हुए मुखड़ों का पानी बना देना चाहते हैं। मनोज शर्मा ऐसी ही परम्परा से हैं, जो बिना किसी बड़े हल्ले में शामिल रहे जनता की आवाज़ बनती रही है। 'मील पत्थर बुला रहा है' संग्रह की एक कविता में मौजूद कवि के इस बयान को उनकी कविताई की दिशा मान लिया जाए तो हर्ज़ नहीं होगा : *महोदय/यदि यह कोई प्रतियोगिता है/ मैं इससे बाहर होता हूँ* –प्रतियोगिता से बाहर रहकर ही कविता में शामिल रहा जा सकता है।

असहायों, अनपढ़ों, असंगतों के लिए/ दर्ज़नों सुनहरे सपनों संग वह आता है/ और दुःख की घुप्प कोठरियों की खुलने लगती हैं साँकलें – यह कविता का वैश्विक स्वप्न है। साधारण जीवन और मनुष्यों का पक्षधर होना मेरे निकट कविता की कसौटी है और मैं मनोज शर्मा की कविताओं को पढ़ता हूँ, तो यह कसौटी और भी पुख़्ता हुई जाती है। यह देखना आश्वस्त करता है कि विचार के सुदीर्घ पतझरों के बीच कुछ पेड़ अब भी ऊँचे खड़े हैं।

एक पूरी कल्पना है यहाँ/ एक ठेठ समाज है/ भरा-पूरा स्वराज है – ऐसे ठेठ समाज और एक भरे पूरे स्वराज की कामना करने वाले इस संग्रह का बहुत-बहुत स्वागत और कवि अग्रज को मेरी शुभकामनाएं।

-शिरीष कुमार मौर्य

रश्मि प्रकाशन
लखनऊ

ISBN 978-81-946421-5-2
रुपये 250
9 788194 642152

Scanned with OKEN Scanner